Special Issue Vol-01, Jan. to March 2021

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

(8) Dr. Sangita Aher (Hindi)

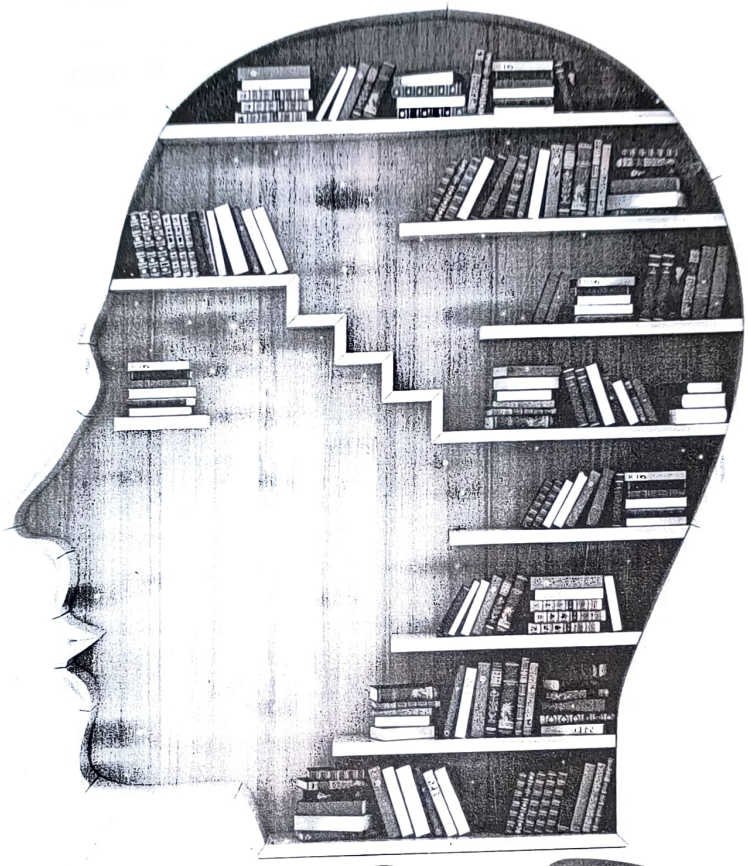

समकालीन विमर्श

अतिथि संपादक
प्रा. डॉ संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर
प्रा. डॉ गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे

INDEX

१. स्त्री – विमर्श स्वरूप एवं संवेदना ||13
डॉ. नागनाथ संभाजी वारले

२. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में स्त्री विमर्श ! ||16
डॉ. दस्तगीर देशमुख, डॉ. शेख लतीफ

३. क्वारंटाइन उर्मिला स्त्री विमर्श के परीप्रेक्ष्य में ||23
प्रा.डॉ.अभिमन्यु न.पाटील

४. मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी नारी ||26
प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव

५. हिंन्दी स्त्री विर्मशपर वैश्विकरण का प्रभाव ||30
प्रा. डॉ. रेखा मुळे

६. ममता कालिया की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज की महिलाओं का यथार्थ चित्रण ||33
डॉ.गजानन हरीराम बने

७. भूमंडलीकरण : स्त्री विमर्श का वास्तव ||38
प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार

८. निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री संवेदना ||41
डॉ.ढाणकीकर शोभा नारायणराव

९. हिंदी गद्य साहित्य में महिला सशक्तीकरण ||44
प्रा.दिगंबर ज्ञानोबा गायकवाड

१०. मंगला प्रसाद पुरस्कार प्राप्त काव्यत्रयी में नारी अस्मिता ||48
डॉ गरिमा जैन

११. स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'गुड़िया–भीतर–गुड़िया' आत्मकथा का मूल्यांकन ||52
डॉ.भगवान रामकिषन कदम

१२. नारी संघर्ष की कथा–'जमाने में हम' ||55
डॉ. अनिला मिश्रा

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

ही भोगा है । चौदह वर्ष के लॉकडाउन मे रहकर एक आदर्श नागरीक, आदर्श नारीत्व को प्रस्थापित किया है । उर्मिला का यह लॉकडाउन देखने के बाद क्या हमने उर्मिला कि तरह लॉकडाउन का पालन किया है क्या ? यह प्रश्न हमारे सामने आता है । हम स्यंम भी परेशान रहे और प्रशासन को भी परेशान कर दिया । हमने सभी त्यौहार मनाये । सुख मै रहे हमने किसिका भी त्याग नही किया । उर्मिला को पता है की यह चौदह वर्ष ऐसे समाप्त होने वाले नही है । इसके संदर्भ मे वह कहती है–

"चौदह चक्कर खाएगी जब यह भूमी अंभग
घूमेगे इस ओर तब प्रियत्म प्रभु के संग ।"

चौदह वर्ष का लॉकडाऊन समाप्त हो जाता है। सब बंधन पाले और चौदह वर्ष का समय बित जाता है सभी बंधन टूट जाते है। और उर्मिला को अपने पति के दर्शन हो जाते है । उन्होने अपने आप मे लगाये बंधन छोड देती है । रघूकूल कि शान बढाई । साथ मे एक आदर्श नारी या नागरीक का धर्म निभाया । जब रावन का वध करके राम सिता लक्ष्मन वापस आयोध्या आते है, तब उर्मिला कि अवस्था देखकर प्रभू श्रीराम कहते है –

" तूने तो सहधर्मचारिणी के भी ऊपर
धर्म–स्थापना किया भाग्यशालिनी, इस भू पर ।"

अनेक कवियो ने तो रामायण मे राम सिता का गुणगान किया है । परंतु उपेक्षित उर्मिला का किसिने भी जिक्र नही किया है । उर्मिला शोभाशील और पवित्रता कि त्रिवेणी है । संयम,त्याग एंव तपस्या की अधिष्ठाञी है । पतिव्रत धर्म का उदाहरण है । वह सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, शालिनता की मूर्ती है । ऐसी उर्मिला को मेने कोरोना काल मे लॉकडाऊन के साथ जोड दिया है । यह लॉकडाऊन हमारे लिए नया नही है । उर्मिला ने तो हमसे ज्यादा लॉकडाऊन को भोगा है ।

संदर्भ ग्रंथ

१) रामचरित मानस :– गोस्वामी तुलसिदास

❑❑❑

4

मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी नारी

प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव
महिला महाविद्यालय, गेवराई जि. बीड

****

मन्नु भंडारी की कहानियाँ नारी के स्वतन्त्र अस्मिता और अस्तित्व के साथ समाज में एक नया दृष्टिकोण स्थापित करती है। आधुनिक कहानियों में नारी का जीवन के प्रति एक परिवर्तित भावलोक है, इसीलिए इन कहानियों की नारी सामाजिक मान्यताओं का खंडन करती हुई स्वतन्त्र व्यक्तित्व का निर्माण कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करती है। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में नारी की चेतना को जगाया है। परिवार से लेकर विभिन्न कार्यक्षेत्रों में नारी की दशा और दिशा में क्रान्ति के स्वरों को जगाया है। नारी केवल पुरुष की अनुगामिनी ही बनी रहें इस विकृत मानसिकता का विरोध कर उसकी अस्मिता की तलाश महिला कथाकारों की कहानियों में प्रखरता से पनपने लगी। मन्नू भंडारी ने स्वयं नारी होने की सारी सम्भावनाओं को महसूस किया और एक अनूठी जीवन्तता उनकी कहानियों में आयी, जो नारी के सारे प्रश्न, संघर्ष, घुटन, व्यक्तित्व, अस्तित्व, अस्मिता और चेतना को लेकर आगे बढ़ती है। नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व भी अत्यन्त सजीवता के साथ उनकी कहानियों में उभरकर आता है।

आत्मनिर्भरता, सामर्थ्य, स्वतन्त्र और मुक्ति की आकांक्षा रखनेवाली आज की युवती के माध यम से श्क्षयश कहानी की कुन्ती, जीती बाजी की हार कहानी की मुरला, घुटन कहानी की मोना और श्यही सच हैश कहानी के दीपा के माध्यम से जीवंत दस्तावेज को प्रस्तुत किया है। इन कहानियों

की नायिकाएँ कामकाजी अविवाहित, नारियाँ है। मन्नू जी की श्क्षयश कहानी की कुन्ती के द्वारा ऐसे चरित्र की व्यथा सामने आयी है की स्त्री अर्थ का स्त्रोत बनकर परिवार की जिम्मेदारी को निभाती रहे चाहे वह उम्र भर अविवाहिता ही क्यों न रहे। स्त्री–पुरुष समानता का भेद तो यहाँ पर मिट जाता है, परन्तु नये प्रश्न खड़े होते हैं, जो स्त्री को व्यथित कर देते है। कुन्ती पर अपने परिवार का उत्तरदायित्व है और उसे वह बखुबी निभा रही है। कुन्ती के पापा आदर्शवादी है, उन्होंने कभी लड़का–लड़की में भेद नहीं किया। आज पापा की बिमारी में पूरे घर की जिम्मेदारी को वह सक्षमता से निभा रही है। उसके पापा को कुन्ती पर बड़ा गर्व है वे कहते हैं, ष्वह उनकी लड़की नहीं लड़का है। शुरु से ही उसे लड़के की तरह ही पाला....बचपन में वह लड़को के साथ खेली, लड़को के साथ पढ़ी अब लड़को की तरह ही इस घर को सँभाल रही है।ष् सच है पढ़ी–लिखी युवती युवक का स्थान ले रही है, परिवार की जिम्मेदारियों को निभा रही है। परन्तु उसके सपने खत्म होते जा रहे है। पिता की बीमारी तथा भाई की शिक्षा के लिए उसे अपने सपने और आकांक्षाओं का गला। घोंटना पड़ता है, ऊपर से परिवारवालों की अपेक्षाएँ भी बढ़ती है। वह तो मात्र साधनपूर्ति का माध्यम बनकर रह जाती है। उसके बारे में कोई नहीं सोचता है। उसका भाई जब फेल हो जाता है, उसकी सिफारिश वह हेडमास्टर से नहीं करती है इसीलिए पापा उस पर नाराज होते है। उसके अपने कुछ सिध्दान्त है, आदर्श हैं पर उसके बारे में कोई नहीं सोचता। वह एक अध्यापिका है इसीलिए यह सिफारिश करना उसे गलत लगता है। परन्तु पापा की बीमारी और भाई की जिम्मेदारी के कारण उसके आदर्श और सिध्दान्त पैरोंतले रोंदे जाते है। वह ट्यूशनवालों से पाँच सौ रुपये उधार लेती है, यह कैसे चुकाएँ यह प्रश्न उसके सामने है। गाँव का मकान बेचने के बारे में वह सोचती है। कुन्ती अकेली पड़ गई है, परिवार की जिम्मेदारियों के बोझ से वह असहाय बनी है। वह सोचती है, ष्इतनी बड़ी दुनिया में क्या कोई भी ऐसा नहीं है जो उसकी पीठ पर आश्वासन भरा हाथ रखकर दो शब्द सांत्वना के ही कह दे।ष्२ आज के इस आधुनिक युग की यह विडंबना है कि कामकाजी नारी परिवार वहन का माध्यम बन रही है। उसके सुख और सपने को उसके अपने ही रौंदते है। ष्उसकी यह खाँसी, यह खोखली–खोखली आवाज, पापा की खाँसी से कितनी मिलती–जुलती है...हूबहू वैसी ही तो है।...सहमकर उसने गाड़ी के शीशे में से देखा, कहीं उसके चेहरे पर भी तो वैसा कुछ नहीं जो उसके पापा के चेहरे पर।ष्३

श्क्षयश कहानी नारी की आत्मनिर्भरता, कर्तव्य भावना के साथ उसके जीवन का सूनापन, टूटना–सँभलना और इन सारी पारिवारिक जिम्मेदारी के बोझ तले अविवाहित रहकर क्षय होते जाना आधुनिक युग के सचेतनता बोध है। परिवार वहन का माध्यम बनने की नियति को इस कहानी में बड़े ही सजगता से प्रकट किया है।

आधुनिक युग की नारी अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को सुरक्षित रखना चाहती है, इस बीच वह कभी घुटन भरी जिन्दगी जीती है तो कभी उच्छृखता की कड़ी बन जाती है। दोनों स्थितियों में वह आहत होती है। अकेलेपन की त्रासदी को उसे सहन करना पड़ रहा है। आर्थिक रुप से स्वतन्त्र नारी को कानूनी रुप से भी योग्य पुरुष चुनने एवं न चुनने का अधिकार प्राप्त है। कभी.कभी यही भाव उसके अन्तर्जगत का बहुत बड़ा द्वन्द्व बनकर उसे क्षण की अनुभूति की श्रेष्ठता में जकड़ लेता हैं। यही सच है कहानी की दीपा एक अस्थिर और चंचल मन की युवती है। वह घुट–घुटकर नहीं जीती बल्कि क्षण के दर्शन को श्रेष्ठ मानकर उसमें अपने–आपके ढाल देती है।

लेखिका ने महानगरीय जीवन में उद्भूत विसंगतियों से बचने के लिए क्षणबोध को महत्व दिया है। उनकी श्यही सच हैश् की दीपा उसी क्षण का स्वीकार करती है जिसे उसने निर्बन्ध भाव से भोगा है। दीपा निशिथ के प्रेम में डूबी हुई है। वह कानपूर में रिसर्च कर रही है, वहाँ उसकी जिन्दगी

वह आशा को कहती है, ष्सहारा उसे चाहिए जो अपने को अबला समझे। मै तो सबला हूँ, मुझे किसी का सहारा नहीं चाहिए। बच्चों को तो मैं अपनी उन्नति का बाधक समझती हूँष्। आशा और मुरला दोनों में शर्त लगती है और शर्त मुरला जीत जाती है। कभी भी शादी न करने की शर्त में मुरला अविवाहित ही रहती है। अपने स्वतन्त्र, मुक्त जीवन को वह खुशहाल मानती है। वह किसी पर निर्भर नहीं थी। शादी करके वह अपना व्यक्तित्व बेचना नहीं चाहती है। और सहारे की उसे कतई आवश्यकता नहीं थी,परन्तु उम्र के पड़ाव में ऐसा मोड़ आ जाता है तब अकेलेपन की त्रासदी आदमी को झेलनी पड़ती, तब यह अकेलापन असह्य सा होता है। जब मुरला आशा से मिलने उसके घर जाती है तब उसे अहसास होता है वह कितनी अकेली पड़ गयी है। उसे पहली बार महसूस हो रहा था, उसका निर्णय कितना गलत था। ष्वह स्वयं महसूस कर रही थी कि एक अजीब –सा सूनापन उसके हृदय में भर रहा है। पहली बार उसे पुस्तकों का बोझ कुछ असह्य सा प्रतीत हुआ। एक अजीब–सी कल्पना उसके मस्तिष्क में दौड़ गई कि उन किताबों के स्थानपर उसके हाथ में भी आशा के बच्चे की तरह एक कोमल गुदगुदा–सा बच्चा हो तोष्९

आजीवन अविवाहित रहने का मुरला का निर्णय आशा के बच्चे को देखकर डगमगा जाता है। उसे अहसास होता है वह कितनी अकेली पड़ गई है। स्त्री की सहजसुलभ मातृत्व की भावना भी उसकी आकांक्षाओं और आत्मनिर्भरता को ध्वस्त कर देती है। अपनी सहेली आशा को उसकी बच्ची को माँगना आज उसे असहाय बना देता है। आशा ने उसे मांगने के लिए कहा तो वह कहती है, ष्तो अपनी यह बिटिया मुझे दे दोष१० दाम्पत्य व्यवस्था नकार कर अकेली जीने का मुरला का निर्णय खुद उसे अकेला और खोखला कर देता है। कामकाजी युवती के मन में खुद की स्वतन्त्रता का और मुक्ति का भाव महानगरों में बढ़ रहा है, परन्तु यह खोखला साबित हो रहा है। मुरला इन अविवाहित कामकाजी नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। पुरुष वर्चस्व से मुक्त उसका स्वतन्त्र व्यक्तित्व अपने आप में पूर्ण सच न होकर आधा सच ही साबित हुआ है। अकेली नारी का जीवन यातनाओं और त्रासदी से खण्ड–खण्ड होता है। आज की आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र और मुक्त रुप से जीने की आकांक्षा रखनेवाली नारी की व्यथा को अपनी कहानियों में मन्नू जी ने व्यक्त किया है।

मन्नू भंडारी की कहानियाँ जीवन से जुड़ी हुई है। उनकी कहानियों में अनुभव संसार की व्यापकता देखने को मिलती है। उन्होंने सूक्ष्म दृष्टि से नारी मन की स्थिति को उभारा है। इन कहानियों में नये मानव मूल्यों को गढ़ने का सफल प्रयास मन्नू भंडारी ने किया है। नारी जीवन के जीवन्त दस्तावेजों को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आधुनिक जीवन बोध के कारण संश्लिष्ट होती जा रही मानसिकता का चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है।

संदर्भ सूची :

१) मन्नू भंडारी – यही सच है और अन्य कहानियाँ (क्षय) १६
२) वही वही २४
३)वही वही २०
४)वही वही (यही सच है) १३२
५)वही वही १३६
६)वही वही १४९
७)वही वही १५१
८)वही वही (जीती बाजी की हार) ३८
९)वही वही ४०
१०)वही वही ४१

❑❑❑

में संजय आता है। वह संजय से भी बेहद प्रेम करती है। रजनीगंधा के फूल दीपा को पसंद है इसीलिए संजय ये फूल दीपा के कमरे में रखता है तब दीपा को लगता है, ये फूल जैसे संजय की उपस्थिति का आभास देते रहते है।[४] दीपा किशोरावस्था में निशिथ से प्रेम करती थी, परन्तु संजय के मिलने पर वह संजय से प्रेम करने लगती है। संजय के निशिथ को लेकर साशंकित होता है, तब उसे लगता है कि वह झूठ है संजय का प्रेम ही सच है। उसे लगता है वह तो बचपन का प्रेम है, केवल पागलपन और कुछ नहीं। वह संजय से कहती है, ष्विश्वास करो संजय, तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है। निशिथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था झूठ था।[५] इसके बाद दीपा इंटरव्यू के लिए कलकत्ता आती है। फिर वह निशिथ के बारे में सोचने लगती है कि निशिथ ने अब तक विवाह क्यों नही किया होगा। कलकत्ता में निशिथ उसे मिलता है तो उसका प्रेम ही उसे सच्चा लगता है, वह उसकी और खींचती जाती है। गाडी तक उसे छोड़ने आता है तब उसे लगता है, यही प्यार सच्चा है, बाकी सब मिथ्या है। ष्विश्वास करो यदि तुम मेरे हो तो मैं भी तुम्हारी हूँ, तुम्हारी। एकदम तुम्हारी।[६] निशिथ से मिलने के बाद वह निशिथ की हो जाती है और संजय को भूल जाती है। निशिथ का प्रेम सच्चा और संजय का प्रेम उसे झूठा लगने लगता है। निशिथ को पत्र भेजती है, उसका उत्तर भी आता है और वह पत्र के बारे में सोचने लगती है कि श्शेष फिरश में निशिथ क्या लिखेगा? मन में ठान लेती है कि वह संजय से कहेगी कि, ष्मैं तुम्हे प्यार नहीं करती। आज एक बात अच्छी तरह जान गई हूँ कि प्रथम प्रेम ही सच्चा होता है। बाद में किया हुआ प्रेम तो अपने को भूलने का, भरमाने का प्रयत्न मात्र है।[७] उसकी द्वन्द्वात्मक स्थिति है। उसे ही समझ में नहीं आता कि वह किससे प्रेम करती है। इतने में संजय रजनीगंधा के फूल लेकर आता है तब दौड़ती हुई उससे वह लिपट जाती है। और फिर उसे लगता है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था, यह क्षण ही सच है। दीपा का स्वभाव है जो क्षण वह जीती है, उसेही वह सच मानती है।

आज की नारी निर्णय के द्वन्द्व में फँसी हुई है। आधुनिक होने के कारण विचारों से तो वह मुक्त है, स्वतन्त्र है, परन्तु निर्णय नहीं ले पा रही है। इसी दोलायमान स्थिति में जी रही दीपा वर्तमान क्षणों को ही सच मानती है। इस तरह जो क्षण वह जी रही है, वही उसके लिए सच है। नारी मन के हर पहलू पर मन्नू भंडारी ने लिखा है। नारी की अन्तर्मन की अचेतन वृत्तियों को अत्यन्त सहजता से अपनी कहानियों को स्त्री देवी और दानवों के छोरों से टकराती हुई कठपुतली नहीं बल्कि हाड–मांस से बनी मानव है और यही सच है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी मन की गाथा और व्यथा है। इनकी कहानियों के नारी पात्रों को अपने स्वतंत्र और मौलिक व्यक्तित्व की तलाश है। उनकी पैनी दृष्टि ने नारी स्वातन्त्र को स्वीकारा है। उनकी श्जीती बाजी की हारश यह कहानी भी आर्थिक स्वावलम्बन से व्यक्त घोर व्यक्तिवाद को अभिव्यक्त करती है।

मन्नू भंडारी की कहानियों की नायिकाएँ जागरुक और अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। उनमें जिन्दगी को सहज तरीके से जीने की ललक है। विवाह एवं प्रेम के सम्बन्ध में मन्नू भंडारी ने नारी स्वातन्त्र को स्वीकारा है। सच देखा जाए तो विवाह ने जितनी अधिक जिम्मेदारियाँ नारी पर लादी है उतनी पुरुष पर नहीं। बिन्दी, मंगलसूत्र, सिन्दूर आदि कितने ही सुहाग के प्रतीकों से विवाह ने नारी को जकड़ कर रख दिया है। शायद यही जकड़न और बंधन मुरला को नहीं चाहिए, वह तो बस स्वतन्त्र और मुक्त तरीके से जीना चाहती है। नलिनी, आशा और मुरला तीन सहेलियाँ है। तीनो ने ऐसा निश्चय किया था कि वे शादी नही करेंगी। परन्तु नलिनी और आशा शादी करती है, फिर भी मुरला अपने निर्णय पर अडिग है। वह शादी और बच्चे को उन्नति की बाधा समझती है। उसकी सहेली उसे जीवनसाथी की आवश्यकता को समझाने की कोशिश करती है परन्तु उसका वह इन्कार करती है।